हरिवंश राय बच्चन के मधुशाला में उभरती मानवीय संवेदना एवं सामाजिक सौहार्द का एकाध्ययन

शिक्षा में डॉक्टर की उपाधि पंजीकरण के लिए प्रस्तुत

शिक्षा विभाग में,

पर्यवेक्षिका — डॉ. चित्रा

शोधकर्त्री — पूजा सैनी

JVR-II/21/5975

शिक्षा विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

2022

हरिवंश राय बच्चन के मधुशाला में उभरती मानवीय संवेदना एवं सामाजिक सौहार्द का एकाध्ययन

प्रस्तावना

हम सभी जानते हैं कि कुछ लोग जन्म से महान बनते हैं, तो कुछ लोग कर्म से। लेकिन महानता को प्राप्त करने में मनुष्य को निरंतर व सतत् प्रयास करने की आवश्यकता होती है। मानव की इस गरिमा पूर्ण गाथा को परिभाषित करते हुए स्वनाम धन्य कवि हरिवंशराय बच्चन स्वतः को साहित्य समाज में अमर बना गए।

20वीं सदी में राजनीति, साहित्य और सिनेमा के क्षेत्र में इतिहास रचने वाले इलाहाबाद के एक साधारण कायस्थ परिवार में 27 नवंबर 1907 को 'बच्चन' का जन्म हुआ था। शुरुआत में उन्हें जिन आर्थिक संघर्षों का सामना करना पड़ा, वे इस देश के सामान्य परिवारों के युवाओं के लिए नए नहीं हैं, लेकिन जो बात बच्चन को खास बनाती है, वह है उनकी क्रमशः संवेदनशीलता, कविता के प्रति समर्पण, स्वाभिमान की ओज, जीवन के प्रति असीम स्नेह, जीवन को जीने की क्षमता। इसका आनंद लें। इन्हीं के समानांतर, समाज की रूढ़ियाँ, जीवन को निरर्थकता की ओर ले जाने वाली नियति के बंधन और दमन–कवि के मन में प्रारंभ में ही एक द्वन्द्व पैदा कर देते हैं। उन्होंने 1925 में हाई स्कूल पास किया, 1927 में उनका विवाह श्यामा से हुआ। 1929 में उन्होंने बी. ए. की और यह दौर उनके जीवन का सबसे कठिन दौर था। खराब स्वास्थ्य, श्यामा यक्ष्मा से पीड़ित, घोर आर्थिक संकट, एक के बाद एक नई आपत्तियां, युवावस्था में पहुंचते–पहुंचते किशोर उम्र की कल्पनाएं यथार्थ की कठोर चट्टान से टकराती हैं, लेकिन आश्चर्य! विषाद, निराशा और वेदना के इस भीषण संघर्ष में 'बच्चन' कामुकता का संदेश बता रहे थे। संसार की नश्वरता और नियति की क्रूरता के समानांतर कवि एक कल्पना बुनता है। श्यामा के देहावसान (17 नवम्बर 1936) तक वे उस कल्पना में मग्न रहते हुए मधुकाव्य की रचना में मग्न रहते हैं। वे दुखों की पराकाष्ठा को जानते हुए भी उन्माद के गीत गाते हैं, जबकि तब तक कवि का जीवन बाँसुरी बन चुका था, तथापि बच्चन का जीवन सुख–दुःख का एकालाप नहीं है, उनका जीवन–चरित्र सुख–दुख–दोनों है। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. कार्के विश्वविद्यालय में अध्यापन, तेजी से पूरा करना, कैम्ब्रिज से डॉक्टरेट, सर्वश्रेष्ठ साहित्य पुरस्कार, राज्यसभा की सदस्यता और अमिताभ के शीर्ष करियर, अगर बड़ी उपलब्धियां उनके साथ जुड़ी हैं, तो उन्हें जीवन के कड़वे अनुभव भी मिले हैं। अभिधा की शराब के स्वाद से अपरिचित, इस पेय के प्याले में सबसे कड़वे और सबसे मीठे पेय का मिश्रण है।[1]

---

[1] मिश्रा, मंजूषा, ''हरिवंश राय बच्चन के काव्य सूत्र'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 3(9), 2014, पृष्ठ 1–11।

मुसोलिनी ने कहा था कि एक प्रतिशत प्रेरणा के लिए निन्यानवे प्रतिशत पसीने की आवश्यकता होती है। बच्चन जी का जन्म किसी ऐसे परिवार में नहीं हुआ था, जो अपनी धन संपन्नता या कुल परंपराओं के कारण उन्हें प्रारंभ से ही एक सफल कवि के रुप में प्रतिष्ठित कर देने में समर्थ होता। जिस प्रकार एक पक्षी अपना आशियाना बनाने के लिए सुदूर से एक–एक तिनका चोंच में लाकर एक सुंदर सा घोंसला बना लेता है, वैसे ही इन्हें कवि के रुप में जो कुछ सफलता, सम्मान या यश प्राप्त हुआ उसे उन्होंने दिन रात अथक परिश्रम करके तिल – तिल स्वयं अर्जित किया। अपने व्यक्तित्व के निर्माण हेतु एक–एक काम को जोड़कर अपने लिए योग्य वातावरण बनाया।

कवि बनने की प्रतिभा के साथ–साथ इसी अनुपात में साधना और परिश्रम भी अपेक्षित हैं। मन और बुद्धि का ऐसा संतुलन जिससे कविता रची जाती है, बिना साधना के प्राप्त होना असंभव है। वैसे तो बच्चन जी के व्यक्ति तथा काव्य की संवेदना को जानने के लिए हमें उनके पूर्ण काव्य संसार की यात्रा करनी होगी। परंतु यहाँ मैं उनकी कविताओं तथा काव्य संग्रहों को लेकर ही उनके काव्य लोक को आलोकित करने का प्रयास कर रही हूँ।

कुछ बच्चन जी के व्यक्तित्व तथा काव्य चेतना के मर्म का उद्घाटन करने के लिए अत्यंत व्यापक चित्रपट की आवश्यकता है। बच्चन जी की कविताओं का अनुशीलन करना भावनाओं के सहज मधुर अंतःस्पर्शी, इन्द्रलोक के सूक्ष्म वैभव में विचरण करना है। बच्चन जी के काव्यों का मूल्यांकन करने के पूर्व उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय इसलिए आवश्यक है कि उनके काव्य तथा उनकी जीवनाभूति का घनिष्ट संबंध है। उनका जीवनवृत्त इस प्रकार निरुपित कर आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

काव्य में कवि का संपूर्ण व्यक्तित्व अभिव्यक्त होता है। कवि की जीवनी और उसके जीवन दर्शन का कवि के काव्य अध्ययन में विशिष्ट महत्व है। अतः जीवनी, व्यक्तित्व और जीवन दर्शन एक दूसरे से संबद्ध होते हैं और इन तीनों का ही काव्य साधना में महत्वपूर्ण योग है। कवि के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को जड़ से जानने के लिए उसके क्रियात्मक जीवन संघर्ष, सुख–दुःख, संकल्प, विकल्प तथा स्वभाव इत्यादि का गहन अध्ययन आवश्यक है।

कवि संवेदना से परिपूर्ण प्राणी है। अतः वाह्यजगत की घटनाएँ उसे प्रभावित करती रहती हैं। कवि के जीवन के क्रमशः उतार चढ़ाव का अवलोकन विशिष्ट क्रियाकलापों के द्वारा हम उसके सृजन की पूर्वावस्था तथा मनोदशा के पूर्णरुपेण परिचित हो सकते हैं। जीवनी के आधार पर ही हमें कवि के काव्य का विकास तथा साहित्यिक निर्माण की सही रुपरेखा तथा आधारभूमि की जानकारी प्राप्त होती है।[2]

---

[2] सूरी, बृजबाला, ''हरिवंशराय बच्चन के काव्य का हालावाद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन'', पिल्लेज़ कॉलेज ऑफ एज्युकेशन एन्ड रिसर्च, 2012, पृष्ठ 1–242।

बच्चन के काव्य में निहित मानवीय दृष्टि एवं सामाजिक चेतना को आत्मसात करने के पहले हिन्दी छायावादी काव्य के सम्बंध में दो शब्द कहना जरूरी है। मैं सम्प्रति यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दी का छायावादी काव्य न तो पाश्चात्य रोमांटिक काव्य का अनुकरण है और न केवल अभिव्यक्ति की एक लाक्षिक प्रणाली है, जैसा हिन्दी के कुछ आलोचकों एवं विद्वानों नें माना है। यह काव्य भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के उद्दाम आवेग से उद्भूत प्रभावी एवं व्यापक नवजागरण तथा कर्मवीर एवं पुरुषार्थी मानवीय आस्था का जयगान है। मेरा मानना है कि इसी पृष्ठभूमि में छायावादोत्तर युग में रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिवंश राय बच्चन, शिवमंगल सिंह सुमन तथा रामेश्वर शुक्ल अंचल आदि कवियों ने हिन्दी साहित्य की काव्य धारा को प्रवाहमान बनाने में योगदान दिया है। जिन आलोचकों ने बच्चन के काव्य को 'एक स्वप्निल शक्ति का प्रवाह भर मानकर उनके काव्य में 'नैतिक विजन का विलयन देखकर उस पर' अपराजेय विवशता का लेबिल चस्पा कर दिया है, उनसे मैं सहमत नहीं हूँ। ऐसे आलोचकों से भिन्न कविवर सुमित्रानंदन पंत ने बच्चन के बारे में जो अभिव्यक्त किया था उसे मैं सत्य के अधिक निकट पाता हूँ। पंत ने बच्चन के बारे में लिखा था कि – 'बच्चन मुख्यतः मानव भावना, अनुभूति, प्राणों की ज्वाला तथा जीवन संघर्ष का आत्मनिष्ठ कवि है।

कुछ आलोचकों की मान्यता अथवा धारणा है कि बच्चन ने तो 'झूमते उन्मत्तता से सुरा के गान गाए हैं; बच्चन तो नारी सौन्दर्य के आसपास चक्कर लगाते ही नजर आते हैं ऐसे में बच्चन को जीवन संघर्ष का कवि किस प्रकार माना जा सकता है मैं इस बात से तो सहमत हूँ कि बच्चन ने मानवीय प्रेम को केवल मानसिक/आत्मिक ही नहीं माना है; यह भी मुझे स्वीकार है कि बच्चन ने प्रेम को केवल भाव – भंगिमाओं के आदान प्रदान तक ही सीमित नहीं रखा है। मैं यह भी स्वीकार करने को तैयार हूँ कि वे उन्मुक्त प्रणय के लिए 'अधर रसपान की बेलाग घोषणा भी करते हैं। उनकी मधुशाला के काव्य–संसार में जिसने लालायित अधरों से हाला नहीं चूमी, हर्ष–विकंपित हाथों से मधु का प्याला नहीं छुआ, लज्जित साकी का हाथ पकड़ उसे अपने पास नहीं खींचा, उसने जीवन की मधुमय मधुशाला को व्यर्थ ही सुखा डाला। इसी जीवन दर्शन के कारण वे बिना किसी लाग लपेट के अपनी कामना की अभिव्यक्ति करते हैं –

> आज सजीव बना लो प्रेयसि/ अपने अधरों का प्याला।
>
> भर लो – भर लो – भर लो इसमें, यौवन मधुरस की हाला।।
>
> और लगा लो मेरे अधरों से, भूल हटाना तुम जाओ।
>
> अथक बनूँ मैं पीने वाला, खुले प्रणय की मधुशाला।।

प्रणय में देह का परित्याग नहीं है केवल इसी कारण वह जीवन के लिए प्रासंगिक, समीचीन एवं सार्थक नहीं हो सकता – इससे न केवल बच्चन का अपितु उनके समकालीन अन्य कवियों की भी सहमति नहीं है। इस प्रकार के जीवन दर्शन में इनका विश्वास नहीं है और मैं समझता हूँ कि यही विश्वास एवं धारणा उन्हें

छायावादी काव्य– चेतना से अलगा देती है। बच्चन की मधुशाला ने लोक प्रियता एवं लोक रंजन के जो कीर्तिमान स्थापित किए उसका ठीक ठीक अहसास उस को सहज हो सकता है जिसे अपने जीवन काल में बच्चन को कवि सम्मेलन में मधुशाला का काव्य पाठ करते हुए सुनने एवं देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पूरा लोक मोक्ष की वैराग्यपूर्ण साधना नहीं कर सकता। जीवन जिन्दादिली का पड़ाव है। 'जितनी दिल की गहराई हो उतना गहरा है प्याला/ जितनी मन की मादकता हो उतनी मादक है हाला/ जितनी उर की भावुकता हो उतना ही साकी का सौन्दर्य है/ जितना ही जो रसिक, उसे है उतनी रसमय मधुशाला। बच्चन की मधुशाला माइकेल जेक्सन जैसे पॉप सिंगर्स का आत्मघाती नशा नहीं है। उसमें दिल की गहराई जितनी गहराई है, मन की अथाह मादकता है, उर की अपार भावुकता है, सच्चे रसिक की आनंदपूर्ण रसमयता है। भारत की मनीषा जानती है कि आनन्द लोक की यात्रा अन्नमय लोक से ही आरम्भ होती है।' साकी बन मुरली आई साथ लिए कर में प्याला/जिनमें वह छलकाती लाई अधर–सुधा–रस की हाला/ योगिराज कर संगत उसकी नटवर नागर कहलाए/देखो कैसें–कैसों को है नाच नचाती मधुशाला।

किसी समाज या देश की समस्याओं का समाधान कर्म–कौशल, व्यवस्था–परिवर्तन, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास, परिश्रम तथा निष्ठा से सम्भव है। इस कारण व्यक्ति, समाज तथा देश अपनी समस्याओं के समाधान करने के लिए तत्पर हैं, जिन्दगी को बेहतर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति एवं विकास की ललक बढ़ रही है। वर्तमान जिन्दगी को सुधारने तथा सँवारने की अपेक्षा, पहले के व्यक्ति को 'परलोक की चिन्ता अधिक रहती थी। उसका ध्यान 'स्वर्ग या 'बहिश्त में पहुँचकर सुख एवं मौज–मस्ती प्राप्त करने की तरफ अधिक रहता था। भौतिक इच्छाओं की सहज एवं पूर्ण तृप्ति की कल्पना 'स्वर्ग या 'बहिश्त की परिकल्पना का आधार बनी। आज के मनुष्य की रुचि अपने वर्तमान जीवन को संवारने में अधिक है। मैं इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि बच्चन 'उस पार के नहीं अपितु' इस पार के कवि हैं। इस पार के जग में 'रस की नदियाँ बहती हैं, रसना दो बूंदें पाती है,/जीवन की झिलमिल सी झाँकी नयनों के आगे आती है,/स्वरतालमयी वीणा बजती, मिलती है झंकार मुझे यदि उस पार इस पार मिलने वाले ये सब साधन भी छिन जाएँगे तो ऐसी स्थिति में मानव की चेतनता के आधार का क्या होगा मनुष्य मशीन नहीं है। उसके पास दिल है, जो धडक़ता है। जीभ है, जो रसास्वाद करना चाहती है। आँखें हैं, जो सुन्दर दृश्य देखना चाहती हैं। कान हैं, जो स्वरतालमय संगीत का आनन्द लेना चाहते हैं। नाक है, जो सुमनों की सुगन्ध सूँघना चाहती है। इस पार इन्द्रियों के आनन्द के सारे साधन सहज उपलब्ध हैं। यदि उस पार ये साधन उपलब्ध न हों तो फिर उस पार की क्या सार्थकता है। बच्चन इसी कारण इस पार के प्रति आश्वस्त हैं–'इस पार, प्रिये मधु है तुम हो तथा उस पार के प्रति आशंकित हैं' – 'उस पार न जाने क्या होगा।'।[3]

[3] महावीर सरन जैन, ''बच्चन के काव्य में निहित मानवीय दृष्टि एवं सामाजिक चेतना'' देशबंधु, 2016।

मधुशाला

मधुशाला का प्रकाशन आधुनिक हिन्दी काव्य की एक ऐतिहासिक घटना है – इसलिए नहीं कि उसने हालावाद चलाया, वरन् इसलिए कि जितनी लोकप्रियता इस काव्य को मिली उनकी किसी भी कृति को नहीं मिली। इसी के आधार पर बच्चन जी ने कवि सम्मेलनों की एक नई परम्परा निर्धारित की। वस्तुतः सामान्य पाठकों में हिन्दी कविता को लोकप्रिय बनाकर काव्याभिरुचि जागृत करने का प्रचुर श्रेय मधुशाला को ही है।

मधुशाला बच्चन में यौवन की मस्ती और आल्हाद का मधुकाव्य है। इसकी रचना सन् 1933 में हुई। इसका प्रथम प्रकाशन सन् 1935 में किया गया। बच्चन के मधुकाव्य के जगत् में मधुशाला सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य रचना है। यह निम्नलिखित पंक्तियों से ही स्पष्ट है –

भावुकता अंगूरलता से खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बन कर आया है भरकर कविता की हाला
कभी न कभर खाली होगा, लाख पिए, दो लाख पिएँ।
पाठकगण है पीने वाले, पुस्तक मेरी मधुशाला।

इसकी कविताएँ सर्वप्रथम बी.एच.यू. अर्थात् बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के शिवाजी हाल में पढ़ी गई थीं। डॉ. मनोरंजन जो कि अंग्रेजी के प्रोफेसर थे, उन्होंने इस कार्यक्रम के सभापति का पद सुशोभित किया था। यह छायावाद के अस्था हालावाद के उदय का काल था। आज तक मधुशाला की जितनी प्रतियाँ बिकी हैं, शायद ही किसी काव्य संचय की बिकी होंगी। प्रारंभ से आज तक मधुशाला को बुरा कहकर उपहास करने वाले, उसकी उपेक्षा करने वालों की कमी नहीं रही है, पर सबसे अधिक कवि सम्मेलनों में चुना जाने वाला काव्य यही था। इनकी रचनाओं में ऐसी कशिश थी कि विरोधी और प्रेमी दोनों एक साथ झूम उठते। शायरी इस काव्यसंग्रह की विशेषता थी। इस प्रकार बच्चन और मधुशाला एक दूसरे के साथी थे।

मधुशाला बीसवीं सदी की एक ऐसी कृति है जो देश की विभिन्न भाषाओं में अनुवादित की गई। खड़ी बोली की पहली काव्य कृति होने का श्रेय इसे प्राप्त है। इसमें की कृतियों में मानव तक की जो संवेदनाएँ प्रकट हुई है, वे अकथनीय है, इसका अनुवाद अंग्रेजी में भी हुआ। इस काव्य संग्रह पर उमर खैय्याम का प्रभुत्व जान पड़ता है। डॉक्टर जयप्रकाश भाटी जी के अनुसार मधुकाव्य जो कि उमर की मूलरचना है, उसका अनुवाद राष्ट्रकवि स्व. मैथिलीशरण गुप्त और स्वर्ण चेतन के सुमित्रानंदन पंत ने भी भावानुवाद किया था पर जो मान–सम्मान बच्चन को मिला था वह अतुलनीय था। खैय्याम ने निराशा में रुवाईयाँ रचीं, बच्चन ने उसे आशा का रूप दे दिया था। खैय्याम की मधुशाला में भोगवाद के दर्शन होते है पर बच्चन जी की मधुशाला में भोगवाद न होकर समाजसुधार और क्रांतिकारी विचार हैं।

मधुशाला का अनुशीलन

मधु शब्द का अर्थ ही मीठा होता है, जो मन को तृप्त करे। बच्चन जी की मधुशाला उतनी ही मीठी थी। इसमें कवि ने दुःख – दर्द, छटपटाहट, बैचेनी, बाह्य और आंतरिक घुटन उन सभी को अपनी संवेदना की कड़ियों के रुप में प्रस्तुत किया है। ,

बच्चन जी कहते है कि ईश्वर के अलग–अलग रास्ते हैं, लेकिन विश्वास और श्रद्धा से कोई भी एक रास्ता पकड़ कर चले जाएँ तो मनचाहे रुप में अपनी मंजिल मिल ही जाती है।

धर्म ग्रंथ सब जला चुकी है
जिसके अंतर की ज्वाला,
मंदिर, मस्जिद, गिरजे सबको
तोड़ चुका जो मतवाला
कर सकती है आज उसी का
स्वागत मेरी मधुशाला।

इसका आनंद वे ही उठा सकते हैं, जिनके दिलों में भेदभाव और विषमता का भाव न हो। जो मंदिर– मस्जिद के चक्कर में नहीं पड़ते उसी का यहाँ स्वागत है।

भाग्यवादी स्वर के साथ–साथ कवि का क्षणवादी स्वर भी मस्ती के हिंडोले झूले पर बहुत झूला है। जीवन में सुख–दुख महत्वपूर्ण होता है। जब दुःख के थपेड़े पड़ते हैं, तब इस संसार में अन्याय अनीति की मार पड़ती है। जिस के जीवन की मस्ती में तराबोर मधु का मतवाला अपनी मधुशाला से मस्ती पाकर, प्रेरक शक्ति पाकर सब कुछ सह जाता हैं।[4]

संवेदना का तात्पर्य

संवदेना मानव के आन्तरिक भावनाओं का उजागर करती है। संवेदना शब्द का जब संधि–विच्छेद किया जाता है, तो प्राप्त होने वाला शब्द होता है सम् अर्थात् समान, वेदना अर्थात् किसी का दर्द। संवेदना एक ऐसा भाव है जो मस्तिष्क से नहीं अपितु ह्रदय से प्रस्फुटित होता है। बच्चन जी का जीवन निरन्तर संघर्षो से घिरा रहा। जिन्दगी में उन्होंने बहुत कुछ खोया और उससे ज्यादा पाया। खोने – पाने के इस क्रम में उन्हें वक्त से लड़ने की शक्ति मिली । सुख के सुखद समय ज्यादा दिन याद नहीं रहते पर दुरूख के थपेड़े अर्न्तमन में

[4] सूरी, बृजबाला, ''हरिवंशराय बच्चन के काव्य का हालावाद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन'', पिल्लेज़ कॉलेज ऑफ एज्युकेशन एन्ड रिसर्च, 2012, पृष्ठ 1–242।

बस जाते हैं। मानव दुःख का दामन पकड़े रहता है और सुख की प्राप्ति हेतु मृग मरिचिका की भांति यहाँ – वहाँ भागता रहता है।

बच्चन जी ने अपने साथ घटने वाली घटना का सफलतापूर्वक अध्ययन किया और उससे अपने आपको मजबूत किया और जाना कि जीवन दुःख के प्रति चिन्ता करने का नहीं अपितु उससे मुकाबला करने का नाम है। इसी इच्छा से अभिप्रेरित होकर वे अपने एकांत संगीत में लिखते है–

एक पत्र– छाँह भी मांग मत, मांग मत, मांग मत

अग्निपथ! अग्निपथ! अग्निपथ !।

संवेदना सिक्के की भाँति मानव के जीवन को प्रदर्शित करती है। जैसे सिक्के के दो पहलू होते है, उसी भांति जीवन के भी दो पहलू होते हैं। एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक दोनों पहलू का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता रहता है। संवेदना बरगद के पेड़ की तरह है जो कि अपने जड़ से निर्माण न कर अपनी शाखाओं से नयी सृष्टि को पुष्पित और पल्लवित करती है।

बच्चन की संवेदना ने सत्य को स्वप्न नहीं अपितु स्वप्न को सत्य बनाने का संदेश दिया है। जयशंकर प्रसाद की निम्न कविता का निर्माण अवश्य ही दुःख निर्मित हुआ होगा ।

वियोगी होगा पहला कवि,

आह से उपजा होगा गान

आँखों से निकलकर चुपचाप,

ही होगी कविता अनजान ।

उनकी कविता बच्चन जी की कविता में उनके मन की संवेदना इतनी प्रबलता से दिखलाई पड़ती है कि उन्हें शब्दों की लड़ी की कड़ी में पिरोना आसान नहीं है। उनकी रचना पढ़कर पाठकों की स्थिति गूँगे केरी शर्करा खाय और मुसकाय की सी हो जाती है । बच्चन जी की कविता प्रायः आत्मानुभूति से ही प्रेरित होती है। तात्कालिक बाहरी वाद विवादों एवम् आंदोलनों से प्रेरित होने की गहराईयों में संचित संस्कारों, मानव चेतना की स्थाई रागात्मक प्रवृत्तियों एवं व्यक्ति की अंतरतम् भावनाओं से अधिक अनुप्राणित होती है।

अपेक्षा हृदय की हिन्दी के शीर्षस्थ समीक्षकों के द्वारा बच्चन साहित्य की एक एक विधा एक– एक पक्ष प्रवृत्ति को लेकर किया गया विश्लेषण न केवल बच्चन के काव्य के अनेक गौरव पूर्ण आयामों का उद्घाटन करता है, अपितु हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा के भी अनेक गौरव पूर्ण चरण चिन्हों को प्रकाशित, रेखांकित करता है। इस दृष्टि से बच्चन जी के काव्य पर किया गया अध्ययन हिन्दी आलोचना और अनुसंधान के क्षेत्र में भी

एक उपलब्धि के रुप में स्वीकार किया जा सकता है।

बच्चन जी के जीवन संबंधी अवधारणाएँ, जड़ और निश्चल, चिर– परिवर्तनशील रहीं। उन्होंने अपने जीवन में जो भी देखा भोगा, उसी को शब्दों में पिरोकर कविता का स्वरुप दे दिया। पत्नी श्यामा की मृत्यु ने उनके जीवन को अकेलेपन से भर दिया। बहुत समय तक रुध्द बध्द कवि ने स्वभाव के विपरीत एकांत में अपना समय व्यतीत किया। वे अपने ऊपर पहाड़ सा भार महसूस करते थे। पत्नी की मृत्यु ने उनको तोड़कर रख दिया था। जीवन का हर मार्ग उनको एकाकी लगता था। अपनी विरह की वेदना को अपनी लेखनी से उन्होंने शब्द बध्द कर दिया। उन्होंने लिखा है कि श्यामा की मृत्यु के बाद मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मेरा आधा अंग कट गया है। जीवन के इस कठिनतम दौर से गुजरते हुए जब वे पुनः लेखन कार्य करने लगे तो उनकी रसमय कविता शहद (मधु) की जगह नमकीन, गमगीन आँसू बहाने लगी। अपनी प्रियतमा के बिछोह ने उन्हे पंगु बना दिया। उनको अपना जीवन नितांत, निःसंग और व्यर्थ प्रतीत होने लगा।[5]

शोध समिक्षा

अरुण कुमार, (2019)[6] के अनुसार साहित्य में प्रतीक और बिम्ब समय और परिवेश के अनुसार अपने विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किये जाते रहे हैं। हरिवंश राय 'बच्चन' उत्तर छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका रचना संसार मानव जीवन के विभिन्न आयामों का एक गुलदस्ता है। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा निमन्त्रण', 'एकान्त संगीत', 'सतरंगिणी', 'बंगाल का काल' आदि रचनाओं में वे हालावाद से चलकर सामाजिक समरसता के मार्ग से होते हुए आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं। इनके काव्यों में प्रयुक्त शब्द हाला, बाला, मधुशाला, मधुकलश, साकी आदि नितान्त मस्ती, फक्कड़ एवं अल्हणता का अभास कराते हुए भी जब वे अपने आध्यात्मिकता के प्रतीकात्मक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं तो वही उदात्त बन जाते हैं। प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से ही वे अधिभौतिकता से आध्यात्मिकता तक का सफर तय करते हैं।

मनीश प्रसाद, (2017)[7] के अनुसार अनुवाद अध्ययन में एक पाठ का दूसरे पाठ से क्या संबंध है? जब हम एक समग्र पाठ को अनुवाद या मनोरंजन के रूप में, कई वैरिएंट या स्रोत भाषा पाठ में से संश्लेषित करते हैं, तो इसकी स्थिति और उपयोग क्या होता है? जब नए पाठ बनाने के लिए कई प्रकार एक साथ मिल जाते हैं, तो यह मिश्रण यादृच्छिक और स्वच्छंद हो जाता है। या क्या यह एक क्रियाशील एकता में जुड़ जाता है, एक कलात्मक, अर्थपूर्ण समग्रता की सेवा करता है? ये ऐसे प्रश्न हैं जो अनुवाद से संबंधित हैं और अनुवाद के विरुद्ध उठाए गए हैं। अपने प्रस्तावित पेपर में मैं उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करना चाहूंगा – न केवल सैद्धांतिक रूप से बल्कि हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला और उसके मूलरूप के विश्लेषण के माध्यम

---

[5] व्ही, पृष्ठ 55–57।

[6] कुमार, अरुण, ''बच्चन के काव्य में प्रतीक–विधान'', रिमार्किंग एन एनालाइसेशन, 3(11), 2019, पृष्ठ 1–4।

[7] प्रसाद, मनीष, ''अनुवाद और भारतीय दर्शन की पहेलीरू हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला का वाचन'', ट्रांसलेशन टुडे, 11(1), 2017, पृष्ठ 1–25।

से, 'प्रकारों का मिश्रण, संस्करण' के साथ एडवर्ड फिट्जगेराल्ड की उमर खय्याम की रुबाइयां और फिट्जगेराल्ड की खैय्याम की मधुशाला का बच्चन का अपना अनुवाद और वे कैसे मतलब रखते हैं कि उनका वास्तव में क्या मतलब है। शेष पेपर में, मैं कुछ भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोणों से ज्ञान के उत्पादन में अनुवाद कैसे नेतृत्व और मदद कर सकता हूं, इसका पुनर्निर्माण और व्याख्या करने का प्रयास करूंगा। उदाहरण के लिए, अनुवादक की भूमिका पर एक वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य की पेशकश करने के लिए पाठ्य उपभोग के नरभक्षी सिद्धांत पर फिर से काम किया गया है, जिसमें अनुवाद का कार्य भौतिक रूपकों के संदर्भ में देखा जाता है जो अनुवादक की रचनात्मकता और स्वतंत्रता दोनों पर जोर देता है। ज्ञान उत्पादन के मामले में भी यही सिद्धांत हमारे भारतीय दर्शन में समानांतर पाया जाता है, जहां अनुवाद की प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान का उत्पादन और पुनरुत्पादन होता है और अनुवादक के एक नए रचनात्मक कार्य में परिणाम होता है, जिसके पास लक्ष्य भाषा पाठ पर उसकी स्वतंत्रता होती है। इस प्रकार, बच्चन की मधुशाला के माध्यम से मैं ज्ञान उत्पादन की प्रक्रिया के रूप में अनुवाद के संभावित भारतीय विचारों में से एक और ज्ञान की स्वतंत्रता की आवश्यकता को प्रदर्शित करना चाहता हूं, जो अवरोध से अनुवाद है, जिसे लॉरेंस वेणुती ''अनुवाद का घोटाला'' कहते हैं।

मंजूशा मिश्रा, (2014)[8] के अनुसार हरिवंश राय बच्चन का सम्पूर्ण सर्जन एक ऐसा विराट् महाकाव्य है, जिसके नायक वे स्वयं है। आधुनिक महाकाव्यों में गीतात्मकता का सन्निवेश भर है, जबकि 'बच्चन' के जीवन का यह महाकाव्य पूर्णतः एक महागीत है। अभिनव सोपान की भूमिका में पंत जी ने ठीक ही लिखा है कि बच्चन के अधिकांश काव्य में उसकी आत्मकथा के ही पन्ने बिखरे मिलेंगे। कविता के समानान्तर बच्चन की आत्मकथा गद्य रूप में भी विविध खंडो में उपस्थित है। कहना कठिन है कि यह कविता आत्मकथा का प्रतिबिम्ब है या आत्मकथा कविताओं की व्याख्या। कविता और जीवन का इतना संश्लेषण साहित्य–शास्त्र के नये सवाल भी खड़े करता है और उस अर्हता का स्पष्टीकरण भी चाहता है, जो इस नायकत्व का औचित्य सिद्ध कर सके। हमारी दृष्टि में यह औचित्य स्पष्ट है। बच्चन का जीवन संघर्ष–संकुल रहा है। कहीं यह संघर्ष बाह्य है और कहीं आतंरिक, कहीं भौतिक है, कहीं वैचारिक। सर्व सुख–सम्पन्न हो जाने पर भी बच्चन के अपने द्वन्द्व रहे हैं, लगभग दो दशक पहले जब उनका 1929 से 1979 के बीच की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'मेरी कविताई की आधी सदी' छपा था तो उसकी भूमिका में उन्होंने लिखा था।

प्रसून बेनर्जी, (2015)[9] के अनुसार विशिष्ट रहस्यवादी दृष्टिकोणों के बावजूद, पश्चिमी साहित्यिक प्रवचन के लिए रुबाइयात की मान्यता अनिवार्य रूप से मूर्तिपूजक शराब–नशे की मस्ती और सांसारिक जीवन की

[8] मिश्रा, मंजूषा, ''हरिवंश राय बच्चन के काव्य सूत्र'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 3(9), 2014, पृष्ठ 1–11।

[9] बेनर्जी, प्रसून, ''हेदोनिस्ट्स गियर में मिस्टिक का पर्दाः उमर खय्याम की द रुबाइयात और हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला का तुलनात्मक पुनर्पाठ'' एन इंटरनेशनल पीर–रिव्यूड ऑनलाइन जर्नल ऑफ स्टडीज इन इंग्लिश, 1(4), 2015, पृष्ठ 1–73।

खुशियों का जश्न मनाने वाली एक सुखवादी कविता के रूप में रही है और उमर खैय्याम शराब के कवि के रूप में है। साकी (शराब—लड़की) और पेयला (शराब—बर्तन)। लेकिन फारसी और कविता की प्राच्य परंपरा की सावधानीपूर्वक जांच से पता चलता है कि रुबाइयात काव्यात्मक उपकरणों से भरा हुआ है जो खय्याम के छंदों में स्थापित सूफी प्रवचनों पर इंगित करता है, जो लगभग समान है। रूमी, हाफ़िज़ या फ़िरदौसी जैसे कवि। हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला, रुबाइयात के सबसे मूल और प्रसिद्ध ट्रांसक्रिएशन में से एक, भारतीय संदर्भ में उमर खय्याम के इस गुण को पहचानती है और फिर से बनाती है, और पश्चिमी साहित्य के साथ ओरिएंटल साहित्यिक प्रवचन के अंतर को चिह्नित करती है। यह पत्र खय्याम और बच्चन दोनों के छंदों के सुखवादी बहिरंगों से परे उनकी रहस्यवादी चेतना में जाने का प्रयास करता है।

शोधविधि

इस खोज को करने के लिए अनुसंधानकर्ता को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अध्ययन के शीर्षक के विषय के लिए प्रासंगिक अन्य मुख्य शोध निष्कर्ष व्यापक रूप से उपयोग किए गए थे। हरिवंशराय बच्चन की मधुशाला में उभरती मानवीय संवेदनशीलता और सामाजिक समरसता का एक अध्ययन, समीक्षा समय की कमी, निर्णय लेना और डेटा एकत्र करने और प्रसंस्करण के लिए पत्रिकाओं का मूल्यांकन करना। वर्तमान अनुसंधान प्रयास के लिए, शोधकर्ता व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धतियों को नियोजित करेगा। हम कई उल्लेखनीय पुस्तकालयों से जानकारी एकत्रित करेंगे। उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने पर जोर दिया जाएगा। डेटा संग्रह विधियों में वेबसाइटों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करना शामिल हो सकता है।

उद्‌देश्य

1. हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला में मानवीय संवेदनाओं का अध्ययन करना।
2. हरिवंशराय बच्चन की मधुशाला में सामाजिक समरसता का अध्ययन करना।
3. हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला में मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक समरसता की तुलना।

संदर्भ

- मिश्रा, मंजूषा, ''हरिवंश राय बच्चन के काव्य सूत्र'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 3(9), 2014, पृष्ठ 1—11।
- सूरी, बृजबाला, ''हरिवंशराय बच्चन के काव्य का हालावाद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन'',

पिल्लेज़ कॉलेज ऑफ एज्युकेशन एन्ड रिसर्च, 2012, पृष्ठ 1–242।

- महावीर सरन जैन, ''बच्चन के काव्य में निहित मानवीय दृष्टि एवं सामाजिक चेतना'' देशबंधु, 2016।
- सूरी, बृजबाला, ''हरिवंशराय बच्चन के काव्य का हालावाद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन'', पिल्लेज़ कॉलेज ऑफ एज्युकेशन एन्ड रिसर्च, 2012, पृष्ठ 1–242।
- व्ही, पृष्ठ 55–57।
- कुमार, अरुण, ''बच्चन के काव्य में प्रतीक–विधान'', रिमार्किंग एन एनालाइसेशन, 3(11), 2019, पृष्ठ 1–4।
- प्रसाद, मनीष, ''अनुवाद और भारतीय दर्शन की पहेलीरू हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला का वाचन'' ट्रांसलेशन टुडे, 11(1), 2017, पृष्ठ 1–25।
- मिश्रा, मंजूषा, ''हरिवंश राय बच्चन के काव्य सूत्र'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 3(9), 2014, पृष्ठ 1–11।
- बेनर्जी, प्रसून, ''हेदोनिस्ट्स गियर में मिस्टिक का पर्दाः उमर खय्याम की द रुबाइयात और हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला का तुलनात्मक पुनर्पाठ'' एन इंटरनेशनल पीर–रिव्यूड ऑनलाइन जर्नल ऑफ स्टडीज इन इंग्लिश, 1(4), 2015, पृष्ठ 1–73।

धन्यवाद